वैताल कथा

प्रमोद कुमार सिंह

रात काफी गुजर गई थी।मेरी असहजता बढती ही चली जा रही थी।बाहर वर्षात थमने का नाम तक न ले रही थी।मै बैठा बन्द खिड़कियों पर बौछारों की थापें सुने जा रहा था।एकाध बार उठकर मै खिड़कियों तक गया भी।बाहर धुप्प अंधेरा गहराया हुआ था।रह रह कर हवा के झोंके पूरी की पूरी बौछार ही मोड़ ले जाते थे।तभी तहखाने मे कुछ खटका सा हुआ.गोकि वहॉ की सारी लाशें तो मै ठीक ठाक से तोप ढ़ॅक आया था।इन्ही मे से फिर कोई लाश सुगबुगाई होगी!

आखिर ये मुझसे क्या चाहती हैं!वर्षो मै इसी ऊहापोह मे रहा।

पिछले कई वर्षो से आए दिन ही मेरे तहखाने मे कोई न कोई खटका होता रहता है।इन लाशों को मै जीवित तो नही कर सकता.पर इन्हे दफना तो सकता हूँ।शायद ये यही मुझसे चाहती भी हैं।बाहर निकलने की मुझमे हिम्मत न थी फिर भी मै उठा और तहखाने मे गया।एक लाश वाकई मे नंगी पड़ी थी।मै उसे अच्छी तरह चादर मे लपेट कर कन्धे पर डाला और मौन श्मशान की ओर बढ चला.राजा विक्रम की तरह।शव मे स्थित वैताल जगा और बोला यहॉ से श्मशान काफी दूर है।मै तुम्हे एक कहानी सुनाता हूँ ताकि रास्ता भी ठीक ठाक कट जाय और तुम्हे थकान भी न महसूस हो.पर दुर्भाग्यवश ये कहानी किसी गॉव के साहूकार या बनिये की न होकर एक ऐसी कहानी थी जिसका अन्त मुझे पता था और मै स्वयम इस कहानी से प्रत्यक्ष जुड़ा था।मेरे हॉथ पैर ढीले होने को आये।अचानक मै ये सोच कर सिहर उठा कि कहानी के अन्त मे शव मे स्थित वैताल एक प्रश्न भी पूछता है।हम श्मशान से अब ज्यादे दूर न थे।वैताल ने अपना प्रश्न दागा.जिसका उत्तर तो मेरे पास था.पर उत्तर देने की हिम्मत मुझमे न थी।मै हकलाने लग पड़ा।सच बोलने की हिम्मत मै तत्काल कहॉ से लाता!इससे तो मै आजीवन कतराता रहा।मेरे कन्धे का शव लिए वैताल जाकर सामने खड़ी विशाल बरगद की डालियों से न लटका और न मेरे सिर ही फटे.पर मेरे कन्धे पर किसी शव का बोझ न था।मैने राहत की सांस ली।चलो एक से तो मुक्ति मिली.पर ये मेरा भ्रम मात्र था।

मै कई बार श्मशान गया.पर तहखाने का एक भी शव कम न कर पाया।बड़ा जिद्दी वैताल है ये।वो मुझे इन शवों को दफनाने ही नही देता।उसे न कोई विश्लेषण चाहिये न स्पष्टीकरण।उसे बस दो टूक उत्तर चाहिये।प्रश्न भी उसका हमेशा एक ही होता है ‘तुमने ऐसा क्यों किया!

एक बार मै भी उत्तेजित होकर वैताल से बहस बैठा।भींगते भीगाते लाशों को गई रात श्मशान तक ले जाता हूँ और तुम मुझे मेरी ही कहानियॉ सुनाकर वर्षो पहले मेरे द्वारा लिए गए फैसलों को अपना प्रश्न बना लेते हो।मुझे क्यों नही किसी साहूकार की अंधी बेटी का एक गरीब किसान के मेहनती व लंगड़े बेटे से प्यार की कहानी सुनाते हो!कभी तुमने राजा विक्रम को उनकी अपनी कहानी.उनके अपने जीवन की कहानी सुनाये हो! कितने शव थे उनके तहखाने मे! जिन्हे वो आजीवन स्वयम ढोते रहे! कहॉ के राजा थे वे!

वैताल फिस्स करके हंसाः तुम झूठे व कायर हो.ये तुम भी जानते हो।मै तुम्हारे लिए गए फैसलों को एक तरफ रखता हूँ फिर भी अपने को थाम लो .वरना तुम्हारे तहखाने के शव बढते ही रहेंगे।तुम उनका कभी भी दाह संस्कार न कर पाओगे झूठे।

मै तिलमिला कर रह गया।

जीवन भर के बोले झूठों ने मुझे क्या दिया!थोड़ी सी ज़िन्दगी और ढेर सी असहजता।सच मुझे क्या देता या फिर मुझसे क्या लेता.ये मै नही जानता।बस मुझे इतना पता है कि मेरे तहखाने मे कोई लाश न होती और मै बेखटके सो पाता।

अब मुझे इन लाशों के संग ही जीना है।इनका विधिवत दाह संस्कार तो ये जिद्दी वैताल मुझे इस जीवन मे नही करने देगा।